GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

पक्ष, प्रतिपक्ष एवं स्वीकृति: भारतीय ज्ञान पद्यति के महत्वपूर्ण अंग के रूप में

डॉ. भीष्म रणजीत सिंह

सहा.आचार्य, दर्शनशास्त्र विभाग,
गुजरात आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज, एलिसब्रिज अहमदाबाद 380006
ईमेल: SHEKHAWAT.BHEESHM@GMAIL.COM
9782812434

प्राक्कथन:

"मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना" पौराणिक वाक्य भारतीय दार्शनिक वांग्मय में नवाचार के लिए पर्याप्त अवकाश को दर्शाता है| भारतीय ज्ञान परंपरा निर्माण की परम्परा है| 5000 वर्ष से भी अधिक प्राचीन भारतीय गुरु-शिष्य परम्परा में महावीर, बुद्ध, चाणक्य, शंकर, कबीर, गुरु नानक एवं रामकृष्ण परमहंस आदि ऐसे महान शिक्षक हुए जिन्होंने चन्द्रगुप्त, हस्तामलक एवं विवेकानंद जैसे विद्यार्थी निर्मित किये| निरंतर ज्ञान चर्या एवं अनुसंधान भारतीय ज्ञान की विभिन्न विधाओं का मूल रहा है|

हमारी परम्परा प्रश्न आधारित है| बुद्ध एवं महावीर जहाँ वैदिक ज्ञान की दोषपूर्ण निर्वाचना पर प्रश्न उठाते हुए वैदिक ज्ञान की विशिष्ट व्याख्या जैसे पशु बलि का विरोध करते हुए चलाचल जीव-जन्तु एवं प्राणी मात्र से सम्बन्धित मूलभूत प्रश्न उठाते हैं| यह भारतीय चिन्तन की प्रबुद्धता (अंग्रेजी में enlightenment) का द्योतक है|

बौद्ध-मीमांसक शास्त्रार्थ इतिहास में सर्वविदित है जिससे भारतीय ज्ञान परम्परा के खुलेपन एवं अन्य मत की स्वीकृति के रूप में देखा जा सकता है| संवाद किसी न किसी रूप में भारतीय विचार विधा का अंग रहा है| समकालीन चिंतन में स्वामी विवेकानंद जैसे वेदांती हुए जिन्होंने भारतीय सनातन परम्परा के सम्प्रत्यय, परमत (दूसरों के सत्यों) की स्वीकृति के रूप में विश्व को अवगत कराया| प्रस्तुत लेख के माध्यम से वाद-विवाद-संवाद रूपी त्रिक की भारतीय ज्ञान व्यवस्था में भूमिका पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है|

मुख्य शब्द: *भारतीय ज्ञान पद्यति, पक्ष-प्रतिपक्ष, संवाद, स्वीकृति*

परिचय/ विषय प्रवेश

हमारा ज्ञान, हमारी परम्परा, हमारी ऐतिहासिकता.....| जैसे अलंकृत करने वाले शब्द, भारतीय संस्कृति को विस्तार देने की आकांक्षा रखने वाले लोगों के मुख से प्रायः सुनने को मिलते हैं| क्या है भारतीय संस्कृति? क्या है भारतीय ज्ञान पद्यति एवं उसका वैशिष्ट्य? जहां एक ओर वैदिक ज्ञान आधारित गीता, उपनिषद् एवं आस्तिक दार्शनिक तंत्र तथा वहीं दूसरी ओर वेदों के प्रामाण्य का निषेध करने वाले चार्वाक, जैन एवं बौद्ध दर्शन भारतीय ज्ञान परम्परा को निरंतर समृद्ध करते आये हैं| चार्वाक ने जहां आत्मा को मानसिक एवं शारीरिक क्रियाओं के जैविक युग्म में घटाते हुए "देहात्मवादी तत्त्वमीमांसा" की प्रस्थापना की तथा जैन दर्शन ने वैदिक कर्मकाण्ड के मूल संप्रत्यय "स्वर्ग कामोयजेत" एवं बलि अनुष्ठान के औचित्य पर प्रश्न उठाकर वेद की प्रमाणिकता का निषेध किया; वहीं बौद्ध चिंतन में अनात्म, अनित्य एवं दु:ख को सत् के त्रिलक्षण के रूप में स्थापित कर स्वर्ग, वैदिक कर्मकाण्ड के अंतिम सत्य, को चुनौती दी| अतः दृष्टव्य है कि वैदिक कर्मकाण्ड आधारित तात्त्विक चिंतन एवं उसके प्रतिपक्ष के रूप में बौद्ध, जैन एवं चार्वाक दर्शन भारत की भूमि पर पुष्पित-पल्लवित हुए| अतः वह तत्त्व, जिसने वेदों की प्रामाणिकता पर प्रश्न करने वाले दार्शनिक मतों का भारत में उद्भव एवं विकसित होने में सहयोग किया, है-स्वीकृति| स्वीकृति को भारतीय विचार पद्यति एवं जीवन पद्यति का विलक्षण एवं अवियोज्य अंग कहा जा सकता है| संभवतया यही कारण है कि अनेक मत-मतान्तर के बीच भी विरोधी विचार यहाँ सह-अस्तित्व में रह पाते हैं| प्रस्तुत लेख का उद्देश्य हेगेलीय त्रिविध पद्यति पक्ष-प्रतिपक्ष-समपक्ष के समान भारतीय ज्ञान परम्परा में वाद-प्रतिवाद एवं स्वीकृति से निकले अमृत का अध्ययन है|

साहित्यिक पुनरावलोकन:

सोक्रेटिक संवाद पद्यति पर दार्शनिक जगत में प्रायः चर्चा होती रहती है किन्तु संवाद का सबसे पुराना एवं सरलतम रूप भारतीय उपनिषदों में देखने को मिलता है | संवाद के कुछ उदाहरण: भृगुपाख्यान, विरोचनपाख्यान एवं यम-नचिकेता संवाद, ज्ञान के स्थूल से सूक्ष्म तथा चेतना के बहिर्मुखी से अन्तर्मुखी होने की यात्रा के अनुपम एवं सुग्राह्य दृष्टांत हैं|

पश्चिम के आत्मा, जीव-जगत एवं मनुष्य विषयक तात्त्विक एवं आध्यात्मिक चिंतन के सारभूत तत्त्व भारतीय उपनिषदों में पहले ही महत्वपूर्ण स्थान पा चुके हैं| इससे हम समझ सकते है| प्रो. मैक्समूलर ने "*स्टडीज ऑफ़ उपनिषद*" में उपनिषदीय सिद्धांतों का अंगरेजी भाषा में अनुवाद कर उपनिषद के दुर्लभ ज्ञान से अनभिज्ञ एशिया महाद्वीप के बाहर यूरोप एवं अमरीकी महाद्वीप के विचारकों तक पहुंचाया तथा उपनिषदों के महत्व की ओर संकेत किया|

कौटिल्य तर्क विधा के दो भाग करते है आन्वीक्षिकी एवं आत्म-विद्या| आध्यात्मिक एवं स्वानुभूति के विषय रूपी आत्म तत्त्व का ज्ञान आन्वीक्षिकी अथवा तर्क के साधनों से नहीं किया जा सकता| इसी प्रकार इमेन्युअल कांट भी बुद्धि (understanding) एवं प्रज्ञा (reason) के क्षेत्र विभाजित करते हैं|

विवेकानंद: विवेकानंद जी 1893 में जब विश्व धर्म सभा को संबोधित कर रहे थे एवं उनसे जब भारत के भिन्न-भिन्न धर्म एवं उनके आपसी सम्बन्ध के विषय में पूछा तब उनका उत्तर था- "मैं उस धर्म से आता हूँ जिसने अन्य धर्मों के सत्य को स्वीकार किया है |" आज विवेकानंद का विश्व धर्म संसद में भारतीय संस्कृति की चर्चा में हिन्दू धर्म के विषय में किया गया कथन इसी चेतना की सतता एवं दीर्घता के रूप में देखा जा सकता है जब उन्होंने कहा कि वे जिस हिन्दू धर्म के अनुयायी है उस धर्म ने अन्य समस्त धर्मों के सत्यों को स्वीकार किया है| गांधी जी कहते हैं कि सबसे पहले आपके विचार को अस्वीकार किया जाता है तदोपरांत यदि वह विचार नष्ट नहीं होता तब उसका विरोध किया जाता है और अंत में विरोधी हार जाता है एवं उस मौलिक विचार को स्वीकृति मिल जाती है|

भारतीय ज्ञान व्यवस्था पूर्व एवं पश्चिम की दृष्टि में :

भारतीय दर्शन एवं उपनिषदों के विषय में एक पूर्व धारणा है कि यह आध्यात्म विद्या है एवं मोक्ष इसका अंतिम लक्ष्य है| किन्तु ऐसा नहीं है; आध्यात्मिकता भारतीय चिन्तन का एक महत्वपूर्ण अंग है, एकमात्र अंग नहीं| प्रो. दयाकृष्ण[1] भारतीय दर्शन के विषय में कुछ पूर्व-धारणाओं की चर्चा अपने लेख, "*भारतीय दर्शन के तीन संप्रत्यय* " में करते हैं | इन पूर्व धारणाओं में एक है- भारतीय दर्शन मोक्ष केन्द्रित है| किन्तु चार्वाक एवं बौद्ध विचार के साथ ही न्याय-वैशेषिक दार्शनिक तंत्र को देखने

[1] प्रोफेसर दयाकृष्ण (1924-2007) राजस्थान विश्वविद्यालय में दर्शन शास्त्र के ख्याति प्राप्त प्रोफेसर थे तथा उनका समकालीन भारतीय दार्शनिक चिन्तन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है| दयाकृष्ण ने दार्शनिक सिद्धांतों के खंडन-मंडन से आगे बढकर दार्शनिक जिज्ञासाओं एवं प्रश्नों पर नयी दृष्टि से विचार किया| दयाकृष्ण की चिंतन पद्यति को "Questionology" भी कहा गया है |

https://www.gapbhasha.org/

GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

पर हम पायेंगे की इन दर्शनों में मोक्ष विचार प्रधान रूप से नहीं है| जहां चार्वाक एवं बौद्ध दर्शन तात्त्विक आत्म का निषेध करते हैं वहीं न्याय एवं वैशेषिक तंत्र सृष्टि के पदार्थों की तत्त्वमीमांसीय एवं ज्ञानमीमांसीय अध्ययन प्रस्तुत करते हैं| ऐसे में भारतीय चिंतन को केवल मात्र आध्यात्म विद्या एवं मोक्ष केन्द्रित मानना युक्ति संगत नहीं है|

यथा उपलब्धी व्यवस्था न्याय[2] के रूप में भारतीय दार्शनिक तंत्रों में परिमार्जन एवं विकास के लिए पर्याप्त अवकाश का होना भारतीय ज्ञान व्यवस्था के सुदृढ़ आधार की ओर संकेत करता है | उदाहरणार्थ, अरस्तु से टोल्मी तक के चिंतन में ब्रह्माण्ड की धरती केन्द्रित व्याख्या को ही स्वीकार किया गया तथा गेलीलियो के ब्रह्माण्ड की सूर्यकेन्द्रित व्याख्या को नकार दिया गया| तथा कोपरनिकस द्वारा वैज्ञानिक प्रमाणों से सूर्य के केन्द्र में होने को सिद्ध किये जाने के बाद ही अरस्तु एवं टोल्मी की रूढीवादी व्याख्याओं को नकारा जा सका| प्रोफेसर पाही दार्शनिक तंत्र को इस दृष्टि से खुला रखने की बात करते हैं जिससे किसी प्रबल प्रमाण द्वारा सिद्ध नवीन ज्ञान को उस दार्शनिक तंत्र में समाविष्ट किया जा सके और एक सतत प्रगतिशील एवं उत्कृष्ट ज्ञान तन्त्र का निर्माण किया जा सके| यह लचीलापन भारतीय ज्ञान पद्धति का अमूल्य पक्ष है जो कि इसे पाश्चात्य ज्ञान परंपरा से अधिक सहज, सरल एवं वैज्ञानिक बनाता है|

जर्मनी के प्रसिद्द दार्शनिक चिन्तक शॉपनहावर[3] पर उपनिषदों का गहन प्रभाव था तथा यह तथ्य है कि उनका कोई भी दिन ऐसा व्यतीत नहीं होता था जिस दिन उन्होने उपनिषद का अध्ययन न किया हो| दारा शिको[4] ने उपनिषदों का संस्कृत भाषा से फ़ारसी भाषा में अनुवाद किया जिसे "औप्निखा" कहा जाता है, वहां से औप्निखा लेटिन भाषा एवं जर्मन भाषा में अनुवाद किये गये| यह अनुवाद जर्मन दार्शनिक शॉपनहावर के पास पहुंचा| शॉपनहावर ने उपनिषदों के अध्ययन के बाद कहा कि उपनिषद अध्ययन मनुष्य के जीवन का अनिवार्य अंग होने चाहिए|

ब्रिटिश कोलम्बिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ईवेन थामसन, मानव इतिहास का विभाजन ईसा-पूर्व एवं ईस्वी के रूप में किये जाने से बेहतर उपनिषद पूर्वकाल एवं उपनिषद उत्तरकाल के रूप में किया जाना अधिक प्रासंगिक मानते हैं| न्यूयॉर्क विश्विद्यालय के प्रोफेसर डेविड चाल्मर्स *"चेतना की कठिन समस्या"* पर काम कर रहें हैं| डेविड चाल्मर्स व्यक्ति के चेतना अनुभवों एवं मस्तिष्क की क्रियाओं के बीच अंतर स्थापित करते हुए चेतन अनुभवों को न्यूरोन तक घटाए जाने से सहमत नहीं हैं एवं मस्तिष्क में घटित होने वाली भौतिक प्रक्रिया से व्यक्ति किसप्रकार जगत के प्रति चेतन अनुभव करता है, का अध्ययन करने का प्रयास कर रहे हैं एवं अद्वैत वेदान्त के संप्रत्यय उनको इस अध्ययन में अत्यधिक प्रभावित कर रहे हैं| डेविड बेंटले हार्ट येल विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र के आचार्य हैं| उन्होंने डेनिअल डेनेट, क्रिस्टोफर हिचेन्स एवं रिचर्ड डॉकिंस जैसे अनीश्वरवादी विचारकों के ईश्वर विरोधी तर्कों के प्रत्युत्तर में *"द एक्सपीरियंस ऑफ़ गॉड: बीइंग, कोनशियसनेस एंड ब्लिस"* नामक पुस्तक में अद्वैत वेदांत के ब्रह्म तत्त्व का सन्दर्भ करते हुए आस्था एवं आध्यात्मिकता के पक्ष में तर्क किये हैं| इससे भारतीय दर्शन की गहराई प्रमाणित होती है |

भारतीय दार्शनिक तंत्रों का आपसी संवाद:

वेद अभ्यास के दो भाग हैं- ज्ञानकाण्ड एवं कर्मकाण्ड | पूर्व-मीमांसा दर्शन जहां वेद के कर्मकांडीय भाग की व्याख्या करता है वहीं उत्तर-मीमांसा या वेदांत वेदों के ज्ञान मीमांसीय पक्ष की व्याख्या करता है| अथातो धर्मजिज्ञासा- १.१.१ मीमांसा दर्शन का पहला सूत्र, एवं अथातो ब्रह्मजिज्ञासा- १.१.१ ब्रह्म सूत्र का पहला सूत्र, दोनों को देखें तो ज्ञान क्षेत्र में जिज्ञासु की प्रवृत्ति के प्रारंभिक बिंदु के रूप में दो भिन्न तत्त्वों को आधार बनाया है| अतः स्पष्ट है कि मीमांसा एवं वेदान्त दर्शन समान तंत्र(allied schools) होते हुए भी कितने भिन्न विचार के आधार पर दार्शनिक तंत्र का निर्माण करते हैं|

पूर्व-मीमांसा को कर्मकाण्ड के रूप में प्रसिद्धि मिली किन्तु, मीमांसा की एक अद्भुत देन "निर्वचना" अथवा अर्थ-घटन, जिसके लिए ज्ञानकाण्ड की प्रतिष्ठा करने वाले शंकराचार्य स्वयं पूर्व-मीमांसा दर्शन की प्रशंसा करते हैं, की महत्वपूर्ण देन है| **वैदिक दर्शन का वृहद् भाग धर्म, अर्थ एवं काम जैसे सम्प्रत्ययों से आवृत्त है किन्तु मोक्ष का तत्त्व भी वहां है| उदाहरण के लिए, शंकराचार्य शुक्ल यजुर्वेद की 40 संहिताओं में 39 की विषयवस्तु को पूर्वमीमांसा के कर्मकाण्डीय अंग के रूप में स्वीकार करते हैं किन्तु 40वीं संहिता, जो कि यजुर्वेद का ४०वां अध्याय है, को ईशोपनिषद के रूप में वेदान्त का ज्ञानमीमांसीय भाग है| उपनिषद् अध्ययन का महत्व इस बात में है कि यह व्यक्ति के सीमित वैचारिक दृष्टिकोण को खोलता है एवं नवीन ज्ञान एवं दृष्टि उत्पन्न करता है |**

आस्तिक एवं नास्तिक दर्शन के रूप में भारतीय दर्शन का विभाजन किया गया है किन्तु, इस विभाजन के अंतर्गत आने वाले दर्शनों की तात्त्विक एवं नैतिक मान्यताएं एक-दूसरे से पर्याप्त भिन्न है; उदाहरण के लिए, जैन एवं बौद्ध दर्शन में जहां नैतिक जीवन के लिए अत्यधिक आग्रह है वहीं चार्वाक उपभोगवादी जीवन को प्रधानता देता है| आस्तिक दर्शन में जहां, वैशेषिक दर्शन अनेक परमाणुओं की सत्ता स्वीकारता है वहीं सांख्य दर्शन में दो तत्त्व की बात की गयी है तो अद्वैत वेदांत किसी भी प्रकार के द्वैत को स्वीकार नहीं करता| इसप्रकार भारतीय चिन्तन धारा में सत्ता के विविध आयाम दृष्टव्य है| जैन दर्शन के "अनेकांतवाद" का विचार उपलब्ध मतों में श्रेष्ठ प्रतीत होता है |

जिसप्रकार बुद्ध सर्वम् अनित्यम्, सर्वम् अनात्मम् एवं सर्वम् दुःखम् कहते हुए चेतना, जिसे शंकराचार्य ने उपनिषदों के प्रतिपाद्य विषय के रूप में स्थापित किया, का खण्डन नहीं करते| उसीप्रकार **शंकराचार्य अद्वैत वेदांत मत की प्रतिष्ठा में जड़-जगत का खंड नहीं करते अपितु, इसे "सत्यानृते मिथुनिकृत्ये" अथवा सद-असद-विलक्षण कहते हैं| चेतना के स्वरूप की यदि बात की जाए तो चेतना जीवात्मा के जागतिक व्यवहार में सतत विद्यमान है जिसका शुद्ध स्वरूप तुरीय अवस्था में अन्य तीनों अवस्थाओं के व्यवहित अनुभव से परे अव्यवहित अथवा साक्षात अनुभव के रूप में ज्ञान होता है| अतः जिस प्रकार बौद्ध मत व्यवहार सत एवं परमार्थ सत के रूप में दो-सत्यों के सिद्धांत की स्थापना करता है उसी प्रकार शंकर के द्वारा *"ब्रह्मसूत्र भाष्य"* का प्रारंभ अध्यास-भाष्य के साथ करना, व्यवहारिक सत्ता को महत्त्व दिए जाने की ओर स्पष्ट संकेत है|**

वैदिक कर्म-काण्ड में "स्वर्ग कामोयजेत" को आदर्श वाक्य के रूप में देखा गया | वैदिक अनुष्ठान में पशुबलि जैसे हिंसक कृत्य की स्वीकृति ने जैन एवं बौद्ध चिन्तन के लिए मार्ग प्रशस्त किया| बुद्ध कर्मकाण्ड द्वारा स्वर्ग के रूप में नित्य सुख की प्राप्ति का खण्डन करने के लिए अनात्म का विचार देते हैं| गौतम बुद्ध वर्ण व्यवस्था का जाति व्यवस्था में रूपांतरण का प्रमुख कारण वेदों की व्याख्या करने वाले बहरूपिये ब्राह्मण की आलोचना करते हैं क्योंकि इन्होने अपने लोभ के लिए वर्ण को जाति एवं वैदिक ज्ञानकाण्ड को कर्मकाण्ड में परिवर्तित होने दिया| बौद्धों एवं वेदान्तियों के बीच कठोर एवं कटुतापूर्ण शास्त्रार्थ भी भारतीय ज्ञान परम्परा का अंग रहा है | प्रभावशाली बौद्ध चिन्तक भावविवेक[5] ने वेदांत मत का खंडन इस आधार पर किया कि वेदान्त वेदों पर आधारित है एवं वेद का प्रमाण्य ही अतार्किक है| भावविवेक का यह तर्क अत्यंत दुर्बल एवं सतही स्तर का है| सम्भवतया इस प्रकार की धारणा के कारण ही बौद्ध एवं वेदान्तियों के बीच कटुता आ गई हो|

ऐसा नहीं है की आस्तिक दर्शनों के बीच शास्त्रार्थ नहीं हुआ; शंकराचार्य एवं मंडन मिश्र के बीच हुआ शास्त्रार्थ प्रसिद्ध है, जहां मंडन ने पराजय स्वीकार की एवं मीमांसा मत का त्याग कर वेदान्त मत को स्वीकार किया| यद्यपि हिन्दू- बौद्ध धार्मिक इतिहास सौहार्द्रपूर्ण नहीं रहा है किन्तु दार्शनिक चिंतन का इतिहास अद्भुत है| बौद्ध दर्शन के कुछ संप्रत्ययों को लेकर दर्शन के विद्वान दोनों दर्शनों में अत्यधिक समानता के बिंदु देखते हैं| बौद्ध धर्म भारत में प्रायः समाप्त हो गया है किन्तु बुद्ध के विचार आज भी प्रासंगिक है| इसका कारण है- परमत स्वीकृति| बौद्ध एवं वेदांत दोनों दर्शन एक समान सूत्र को अपनाते हैं: सर्वं परवशं दुःखम् सर्वंस्ववशं सुखम्|

---

[2] प्रोफेसर बिश्वम्भर पाही अपनी पुस्तक *"न्यायवैशेषिक पदार्थ व्यवस्था का पद्यतिमूलक विमर्श"* में प्रत्येक दार्शनिक तंत्र के विकास के लिए पर्याप्त अवकास रखने की बात कहते हैं|

[3] शापेनहावर प्रसिद्द जर्मन दार्शनिक हैं एवं उपनिषदों से इतने प्रभावित थे कि विश्व में यदि कोई जीवन एवं दार्शनिक अध्ययन के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ है तो वह एकमात्र उपनिषद हैं|

[4] मुग़ल शासक जिन्होंने इस्लामिक धर्म ग्रंथों के साथ-साथ उपनिषदों का अध्ययन किया तथा दोनों भिन्न विचारधाराओं के बीच समानता के बिंदु खोजने के प्रयास किये|

[5] भावविवेक या भाविवेक ६वीं सदी के एक बड़े प्रभावशाली बौद्ध माध्यमिक शून्यवादी दार्शनिक हैं जिनका तर्क के प्रति अत्यधिक आग्रह रहा तथा तर्क से इतर सभी ज्ञान विधा महत्वहीन है|

https://www.gapbhasha.org/

मत-मतान्तर के बीच स्वीकृति ही वह तत्त्व है जो भारतीय दार्शनिक चिंतन के विविध मतों में समन्वय करता है| "आप दीपो भव" बुद्ध के मन्त्र को वेदांती, स्वामी विवेकानंद ने 19वीं सदी में चरितार्थ किया| वैदिक ज्ञान एवं कर्मकाण्ड को पराकाष्ठा पर पहुंचाने वाले, मनु भी दिखावे रूपी कर्मकाण्ड पर स्वबोध एवं आत्मपरिक्षण द्वारा शुद्ध अंतःकरण को महत्त्व देते हैं| पुराण में आप्त काम का विचार है जो कि सांसारिक सुखो के भोगों से निवृत्ति का संकेत करता है| नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग, राजयोग, हठयोग एवं कुंडलिनी योग जैसी विभिन्न विधाओं को स्वीकृति मिली है|

अंतिम शब्द के रूप में भारतीय ज्ञान परम्परा में सिद्धांत एवं वैयक्तिक जीवन दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं | सोक्रेटीज ने जब ज्ञान को सद्गुण कहा तो उसका निर्देश था कि यदि कोई व्यक्ति किसी मूल्य का उपदेश करता है तो इसका निहितार्थ ही होगा कि उपदेशक उस मूल्य को जीवन जीने के अंग के रूप देखता है| भारतीय परम्परा में जीवन जीने की कला के आधार पर मूल्य एवं नैतिक सिद्धांत का निर्देश किया गया है| उदाहरण के लिए, गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, गुरु नानक, कबीर एवं विवेकान्द इत्यादि ऐसे व्यक्तित्व हुए जिन्होंने जिस जीवन शैली को जीया उसी का निर्देश किया। यही भारतीय परम्परा के पक्ष-प्रतिपक्ष द्वंद्व का स्वीकृति (निज बोध) के रूप में परिणति है|

https://www.gapbhasha.org/